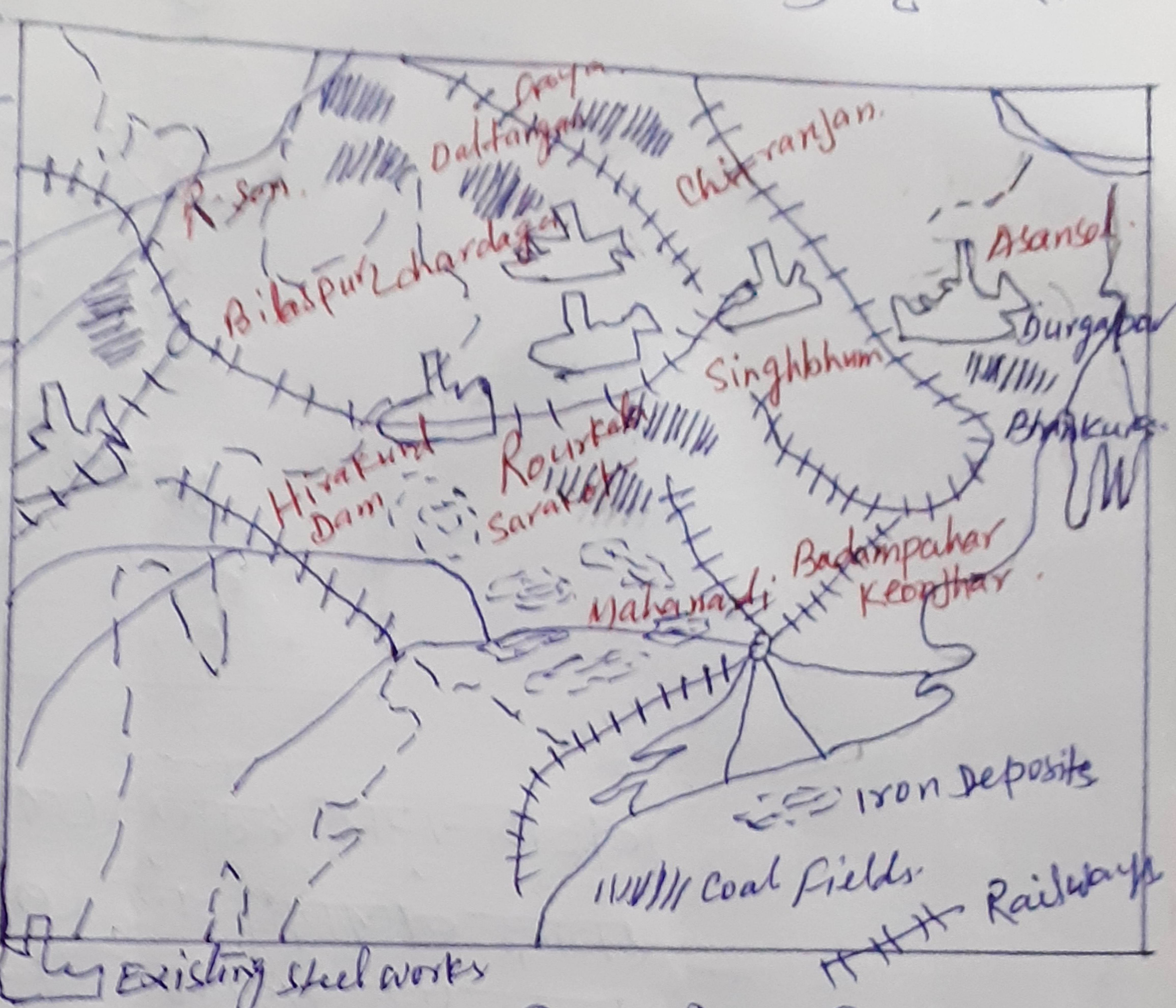


एवं बौकारो क्षेत्रों से, धुना पत्थर बिरमिपुर तथा  
 दुर्गोपादी से, भोजपूर जामदा से, स्वच्छ जल दामोदर नदी  
 से तथा विद्युत दामोदर धाटी निगम के विद्युत गृहों से

बौकारो स्टील  
 लिमिटेड, बौकारो  
 BSL-Bokaro,  
 यह संयंत्र  
 हजारीबाग जिले  
 (झारखण्ड) में  
 बौकारो तथा  
 दामोदर नदियों  
 के संगम के  
 निकट कोयला  
 समृद्ध प्रदेश  
 में अवस्थित है।



इस बौकारो, दारगली तथा झरिया कोयला क्षेत्रों से कोयला, लौह  
 अक्स्क दामोदर जिले की किरिबुरु खदानों से, धुना  
 पत्थर पलामू जिले में भवानीपुर तथा डाल्टनगंज से  
 डाल्टनगंज, बिलासपुर जिले (धनबाद) से, स्वच्छ जल  
 दामोदर नदी पर निर्मित त्रेणु बांध से तथा सरनी शक्ति  
 दामोदर धाटी निगम से प्राप्त होती है। वस्तुतः बौकारो संयंत्र  
 की स्थिति वेबर (Weber) परिकल्पित आदर्श अवस्थिति  
 त्रिभुज के अन्दर है जो सबसे कम लागत वाली स्थिति  
 (least cost location) है।

सलम स्टील प्लांट (SSP, Salem): यह संयंत्र सलम (तमिलनाडु)  
 में स्थित है। निकटवर्ती क्षेत्र लौह अक्स्क, धुना पत्थर, लौह-  
 मिश्र धातुओं तथा रिफाइनरी से सम्पन्न है तथा इस सरनी  
 शक्ति, धारवाले एवं बाजार की सुविधाएँ भी उपलब्ध

Steel plants and ore deposits in India



विजयनगर स्टील प्लांट (Vijayanagar steel plant): यह संगन बेलारी जिले (कर्नाटक) में हास्पेट के निकट तैरनगल स्थान पर अवस्थित है। इसे हास्पेट प्रदेश से लौह अयस्क, बेलारी (कर्नाटक) तथा सिंगरनी (आन्ध्र प्रदेश) से कोयला 200 किमी की दूरी पर चूना पत्थर तथा डालोमाइट तथा स्वर्ण जल एवं सस्ती जलविद्युतशक्ति कुंगुमटा परियोजना से प्राप्त होते हैं।

वीएसएल प्लांट विशाखापटनम (VSL - Vishakhapatnam): यह समुद्र तटीय संगन विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश) में अवस्थित है। यह फसोद बेलारी के कोयला क्षेत्रों तथा बेलारी कोयला (कर्नाटक) के लौह अयस्क निक्षेपों से जुड़ा है। इसे चूना-पत्थर, डालोमाइट तथा मैंगनीज बेलारीसगढ़, महाराष्ट्र एवं उड़ीसा से प्राप्त होते हैं। कोयले की लकड़ा ग्रीन चॉपाई आवककाला आगंतों द्वारा पूर्ण होते हैं। पूर्णतः आधुनिकीकृत संगन 1992 में कार्यरत हुआ। यहाँ उत्तम किस्म का इस्पात बनता है जो चीन तथा दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों को निर्यात किया जाता है।

लघु स्थापना संयंत्र (Mini Steel plants): - 10,000 टन से  
 5 लाख टन की क्षमता वाले संयंत्र सामान्यतः स्टील (Scrap),  
 पिघा आयरन या स्पंज आयरन प्रयोग करते हैं तथा विद्युत  
 भट्टियों द्वारा स्थापना की जाती है। देश में 200 से अधिक लघु  
 स्थापना संयंत्र हैं जिनकी कुल स्थापित क्षमता प्रति वर्ष 2 मिलियन  
 टन स्थापना उत्पादन की है। ये संयंत्र देश को निम्न आकारों  
 में समेकित स्थापना संयंत्रों से दूर स्थित हैं।  
उत्पादन (Production): पिछले पाँच दशकों में देश में पिघा  
 आयरन तथा स्थापना के उत्पादन में चमत्कारी वृद्धि हुई है। निम्नके  
 तालिका से पिघा आयरन, स्थापना तथा स्थापना (मिलियन टन)  
 उत्पादन की प्रकृति इस प्रकार है -

वर्ष	पिघा आयरन	स्थान पिघा	स्थान
1950-51	1.69	1.47	1.04
1960-61	4.31	3.48	2.39
1970-71	6.99	6.14	4.64
1980-81	9.55	10.33	6.82
1990-91	12.15	11.10	13.53
2000-01	3.39	—	29.27
2002-03	4.08	—	30.63
2003-04	5.28	—	33.67
	3.76	—	36.91

Sources: Economic Survey - 2004-05  
 उपर के तालिका से स्पष्ट होता है कि पिछले पाँच दशकों  
 में देश में स्थापना उत्पादन में 33 गुना वृद्धि हुई है।  
विदेशी व्यापार (Foreign Trade): भारत पर्याप्त मात्रा में  
 पिघा आयरन तथा स्थापना का निर्यात करता है। वर्ष  
 2003-04 में 0.52 मिलियन टन पिघा आयरन तथा 4.84 मिलियन  
 टन स्थापना का निर्यात किया गया है। भारत अपनी  
 अल्प स्थापना की आवश्यकता का एक भाग आयात द्वारा  
 पूरता है। निम्न तालिका में पिघा आयरन का आयात  
 तथा स्थापना का आयात है -

## 4) भारत-इस्पात का आयात

वर्ष	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
माना (लाख टन)	13.25	6.83	20.31	19.20	16.13	14.79	18.01	23.75
मूल्य (कोरोड़ रुपये)	123	147	852	2113	3569	3976	4297	6921

Sources: - Economic Survey - 2004-05 India, 2005

आधिकांश आयात रूस, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, संयुक्त राज्  
 अमेरिका, कोरिया आदि से प्राप्त होते हैं।  
 भारत एवं इस्पात उद्योग की समस्याएं (Problems of Iron and  
 Steel Industry)

- 1) देश में पूंजी की कमी है, अतः इस्पात संयंत्रों-सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित किये गये।
- 2) सार्वजनिक क्षेत्र के संयंत्रों-दक्षतापूर्वक कार्य नहीं कर रहे हैं जिसे काड़ी दानियां उद्योग रहे हैं।
- 3) आधिकांश संयंत्र अपनी स्थापित क्षमता से बहुत कम उत्पादन कर रहे हैं। क्षमता का अधुना उपभोग होने से उद्योगों का लाभ अधिक है।
- 4) रूसी तथा आसियान (ASEAN) अर्थव्यवस्थाओं के एवरस्ट लोक वाद विश्व भर में इस्पात की मांग बढ़ गयी है। इन प्रक्रियाओं में इस्पात उपभोग 100 मिलियन टन से बढ़कर 29 मिलियन टन (1999) मान रहे गये। भारत में इस्पात उत्पादन की गठगट हो गयी है।
- 5) अनेक लघु इस्पात संयंत्रों-निविष्टियों की कम आयु, मुख्यतः में गरीब बंधु, अपराध शक्ति, आयु, कार्यक्षमता पूंजी की कमी तथा बड़े इस्पात संयंत्रों से स्पर्धा आदि कारकों से पीड़ित हो गये हैं।
- 6) भारत में उच्च-श्रेणी के कोयला कोयले की कमी है। इस्पात विदेशों से उच्च-श्रेणी के कोयले के आयात की आवश्यकता पड़ी है। कोयले की आयु विचार होने पर इस्पात संयंत्रों के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- 7) देश के अनेक संयंत्रों में इस्पात उत्पादन की पुरानी तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है जो पचीली होने के साथ-साथ अस्वास्थ्यकर वास्तुमान उत्पादन करते हैं। इस्पात संयंत्रों का आधुनिकीकरण तथा स्थापित की आवश्यकता है।